Q:→ रस निष्पत्ति से क्या तात्पर्य है? इस सम्बन्ध में विभिन्न आचार्यों की मत की समीक्षा कीजिए अथवा रस निष्पत्ति विषयक की प्रक्रिया का परिचय दीजिए :→

अथवा,

रस निष्पत्ति विषयक मतों के सन्दर्भ में अभिनवगुप्त के "अभिव्यक्तिवाद" का विवेचन कीजिए :→

Ans:→ भारतीय काव्य शास्त्र में रससिद्धान्त के सर्वप्रथम मूल प्रवर्तक भरतमुनि है। उन्होंने रस निष्पत्ति के बारे में नाट्य शास्त्र में इसप्रकार मत व्यक्त की है, कि "विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्रस निष्पत्ति"।

अर्थात रस की निष्पत्ति विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से होती है।

भरतमुनि का यह सिद्धान्त परवर्ती आचार्यों के लिए एक तर्क का विषय बन गया है। विशेषकर इस सूत्र के दो शब्द "निष्पत्ति" और "संयोग" के कारण अनेक विवाद उठ गये है। अतः इसे व्याख्या करनेवालों में चार आचार्यों के नाम उल्लेखनीय है। जैसे:- भट्ट लोल्लट (उत्पत्तिवाद), श्रीशंकुक (अनुमिति-वाद), भट्टनायक (भुक्तिवाद), अभिनवगुप्त (अभि-व्यक्तिवाद)।

भरतमुनि ने स्वयं निष्पत्ति और संयोग शब्दों को व्याख्या देते हुए कहा- "जैसे विभिन्न प्रकार के व्यंजनों, द्रव्यों तथा औषधि के संयोग से रस निष्पन्न होती है, उसी प्रकार विविध भावों से युक्त होने पर स्थायीभावों के मेल से नाट्य रस सम्पन्न होता है। भरतमुनि के निष्पत्ति का अर्थ "बनना" और संयोग का अर्थ "स्थायी भावों के साथ पूर्ण योग संगम हुआ"। दूसरे शब्दों में निष्पत्ति

का अर्थ "स्थिति" और "संयोग का अर्थ हुआ "साइसंयोजन"। इसप्रकार भरतमुनि के पूरे सूत्र का अर्थ हुआ "विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों का स्थायी भाव के साथ संसर्ग होने से रस की स्थिति प्राप्त होती है।

भट्ट लोल्लट :-

विभावादि का जो स्थायीभावों से संयोग है, उससे रस निष्पत्ति होती है। विभावादि में से विभावी रूप चित्रवृत्ति के कारण उत्पन्न होते है। अतः विभाव, अनुभाव आदि से पुष्ट किया हुआ स्थायीभाव रस है।

भट्ट लोल्लट की मत की व्याख्या करते हुए डा० नगेन्द्र ने लिखा है, कि "उनका मत भी भरतसूत्र के समान वस्तुपरक ही है। उन्होंने निष्पत्ति का अर्थ "उत्पत्ति के रूप में लिया है"। इस संबंध में डा० नगेन्द्र लिखते है। "विभावों के द्वारा स्थायीभावों की उद्बुद्धि होती है। इसे उत्पत्ति भी कहा जा सकता है। पर यहाँ पर उत्पत्ति का अर्थ अभाव की प्रतीति होती है। अतः भट्ट लोल्लट की अनुसार रस के रूप में किसी नये पदार्थ का उद्भव नहीं होता, बल्कि रस के द्वारा स्थायीभाव विभावादि से उपचित होकर एक नवीन रूप ग्रहण कर लेता है।

(ii) श्री शंकुक :-

श्री शंकुक ने न्यायसिद्धान्त के आधार पर अपना मत व्यक्त किया है। उन्होंने वस्तुपरक एवं अनुभूतिपरक दोनों प्रकार से रस की व्याख्या की है। इनके मत का दार्शनिक आधार न्यायभावसिद्धान्त है। आपने निष्पत्ति का अर्थ अनुमिति मान लिया है। इस लिए उनका मत अनुमितिवाद के नाम से ख्यात है। संयोग शब्द से उन्होंने "गम्यगमक" भाव का अर्थ लिया है। उनके अनुकर्ता मत में

classmate
Date 12|9|06
Page 54

स्थित होकर रसरूप में प्रतीयमान होता है।
शंकुक ने नट को ही माध्यम माना है। परन्तु उनका सिद्धान्त लोल्लट से कुछ भिन्न है। लोल्लट सहृदय नट आदि में नायक के गुणों को ही आरोपित मानता है। परन्तु शंकु के अनुसार सहृदय नट में नायक के गुणों का अनुमान कर लेता है। यह अनुमान चार प्रकार का होता है। जैसे :- (i) सम्यक (ii) मिथ्या (iii) संशय (iv) सादृश्य। इनका मत है कि अभिनयानुभूति न तो मिथ्या ज्ञान है, न संशय है, न वास्तविक है और न सादृश्य। यह केवल एक कलात्मक प्रतीती है। इसके लिए वह चित्र तुरंग न्याय को लेते हैं। चित्र में स्थित घोड़ा वास्तविक न होते हुए भी हम उसे घोड़ा कहने का निषेध नहीं कर सकते। उसी प्रकार नट में मूल पात्र की स्थिति न होते हुए भी हम उसे मूलपात्र कहने का निषेध नहीं कर सकते। सामाजिक इसे अपनी वासना के रूप में ही नाथ रूपान से प्राप्त करता है।

(iii) भट्ट नायक :->

इनके मत का दार्शनिक आधार है। उन्होंने भट्ट लोल्लट के उत्पत्तिवाद और शंकुक के अनुमितिवाद का खण्डन किया है और कहा है "रस न तो प्रतीती होता है और न उत्पन्न होता है और न अभिव्यक्त होता है। असलतः रस विभावादि को साधारणीकृत रूप देनेवाले, अभिधा से बाद होनेवाले भावकत्व व्यापार के द्वारा भावित रस भोजकत्व व्यापार के द्वारा भोगा जाता है।

आपके व्याख्या वस्तुपरक न होकर आत्ममत बन गया है। उन्होंने विभाव आदि का साधारणीकृत होने का भी महत्वपूर्ण तथ्य प्रकट किया है।

अर्थात भट्टनायक के अनुसार रसनिष्पत्ति का अर्थ है विभावादि के भास्य-मान होने पर रसभुक्ति और इसकी भुक्ति भावकत्व व्यापार द्वारा साधारणीकरण होने से होती है। साधारणीकरण होने के बाद भोजकत्व व्यापार द्वारा सामाजिक को रस की साक्षात्कारात्मक अनुभूति होती है और इसी अवस्था में वह रस का भोग करता है। रस का यह भोग सांसारिक भोग से सर्वथा अभिन्न है, बल्कि उनके मत पर भी कुछ आरोप लगाया गया है। जैसे:-

(क) रस निष्पत्ति की क्रिया में भावकत्व और भोजकत्व शक्तियों का कार्य जब लक्षणा और व्यंजना से हो जाता है, तो इन नयी शक्तियों को मानने की क्या आवश्यकता है, जिनका उल्लेख काव्यशास्त्र में भी नहीं हुआ।

(ख) भावकत्व शक्ति से साधारणीकरण हो जाने के बाद भोजकत्व को मानने का आवश्यकता है ही नहीं। इस मत में प्रतिपादित सत्वोद्रेक और साधारणीकरण का सिद्धान्त मौलिक और मनोवैज्ञानिक होने के कारण इसको सबने स्वीकार किया और रस निष्पत्ति की संबंध में इस मत को सर्वश्रेष्ठ माना गया।

(iv) **आचार्य अभिनव मत:-**

सामाजिकों के हृदय में वासना रूप में स्थित स्थायी भाव पहले से विद्यमान होते हैं। उनपर रजस और तमस का आवरण चढ़ा रहता है और स्थायीभाव रसरूप में अभि-व्यक्त हो जाता है। इनके अनुसार संयोग का अर्थ है "व्यंजित", निष्पत्ति का अर्थ है "अभि-व्यक्ति"। ये भट्टनायक के तीन शक्तियों को शास्त्रीय नहीं मानते। यह समस्त कार्य तो शब्द की व्यंजना शक्ति ही करती है। इसी प्रकार रसनिष्पत्ति के चारों मतों में यह अन्तिम मत ही आज सर्वमान्य है।

—— o ——